Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2022

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मूल्य मीमांसाः एक विवेचन

कालूराम [1]

[1] सहायक आचार्य (दर्शनशास्त्र), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध पत्र में मूल्य आधारित व्यक्तित्व सृजन की आवश्यकताओं तथा व्यक्तित्व के सम्प्रत्ययों को रेखांकित करते हुए वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली के स्वरूप को नये रूप में पल्लवित किया गया है। इस क्रम में मूल्यों की नीति शास्त्रीय व्याख्या करते हुए मूल्यों को वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर परिभाषित करते हुए मूल्य शिक्षण विधि को चित्रित किया गया है। मूल्य शिक्षा में शिक्षक व विद्यालय के साथ परिवार की महत्ती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारतीय धर्म दर्शन के आदेशों व निर्देशों को जीवन के एक दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार करने का सराहनीय प्रयास किया गया है। मूल्य आधारित शिक्षा व्यक्तित्व व चरित्र निर्माण की अनिवार्य पूंजी है। जिस पर हजारों मानव–समूह की नींव खड़ी की जा सकती है। मूल्यों को अनिवार्य बताते हुए मूल्यपरक शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर सर्वोतम बल दिया गया है।

KEYWORDS:

मूल्य, प्राचीन, सनातन, भारतीय, शिक्षा, शैक्षणिक संस्थान, व्यक्तित्व, चरित्र, नीतिशास्त्र, भौतिकवादी, मानवता, नीति निर्माण, सदाचार, कर्त्तव्य, सद्गुण इत्यादि।

शोध का उद्देश्य :

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व निर्माण हेतु आज पुनः औपचारिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मूल्य आधारित शिक्षा की महत्ती आवश्यकता प्रतीत हो रही है। शोध का उद्देश्य यही बताना है कि मूल्यों का निर्माण कैसे हो – कैसे मूल्यों की पहुँच व्यक्ति के अंतस मे हो। मूल्यों का केवल प्रचार–प्रसार करना ही शोध का लक्ष्य नहीं है, मूल्यों के अनुरूप का निर्माण कैसे हो, किस प्रकार से मानव इनके अनुरूप आचरण करें, व्यवहार करें, ताकि व्यक्ति का जीव मात्र से वास्तविक जुड़ाव हो सके। व्यक्ति का निहित संकीर्ण/स्वार्थी होना दर्शाता है कि वह कहीं न कहीं मूल्यों की शिक्षा पाने में पिछड़ गया है, वरना मनुष्य में मैत्री, करूणा, दया, मुदिता जैसे संस्कार हमें परिलक्षित होते। शोध में इस बात पर भी गंभीर चिंतन हुआ है कि मूल्यों के बिना विकास अधूरा है। मूल्य हमारे व्यवहार को निर्देशित व नियंत्रित करते है।

शोध प्रविधि :

विभिन्न मानक पाठ्य पुस्तकों, संदर्भ पुस्तकों, मैगजीन, पत्र–पत्रिकाओं से लिखित सामग्री प्राप्त की गई है। इस लिखित सामग्री को ही आधार बनाकर द्वितीयक स्त्रोत के रूप में सार–गर्भित विचार को प्राप्त कर मूल्यांकन विधि से चिंतन प्रस्तुत किया है। आलेख में आलोचनात्मक व चिंतन शैली को प्रधानता दी गई है शोध में प्राथमिक सामग्री संकलन व प्रत्यक्ष अवलोकन विधि से किया गया है।

शोध विषयः वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मूल्य मीमांसा :

जीवन व संसार को हम जिस अर्थ के संदर्भ में समझने की चेष्ठा करते है उस अर्थ को सामान्य रूप से मूल्य कहा जाता है। मूल्य हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साधन माने जाते है। वस्तुतः किसी व्यक्ति विशेष का विकास उसके मूल्यों व स्थायी भावों तथा उसकी मूल प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है। चूँकि मूल्यों का विकास समाज में होता है और सामाजिक सम्पर्क के फलस्वरूप वे मूल्य व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों को परिमार्जित करते हुए उसे नैतिक व्यवहार, सदाचार की ओर अग्रेषित करते हैं, इसलिये व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक मान्यताओं/व्यवस्थाओं के अनुरूप हो जाता है और उसे सुसमायोजित व्यक्तित्व के रूप में समाज के सभी लाभों और उत्तरदायित्वों में प्रतिनिधित्व मिल जाता है।

यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि नीति निर्धारण तथा उस पर अनुगमन के मूल में मूल्य ही काम करते हैं। जैसे – जैसे व्यक्ति में बुद्धि का विकास होता है, वह उचित, अनुचित का विचार कर अपने कर्मों हेतु किसी व्यवस्था विशेष को स्वीकार करता है। या पूर्व निर्धारित नीतियों में अपने विवेक से उपयुक्त परिवर्तन कर कर्म मार्ग को या व्यवहार को व्यवस्थित करता है। नीति में कर्त्तव्य का प्रमुख स्थान है। तथा कर्त्तव्य, कर्त्तव्य का विवेक मूल्यों द्वारा अनुप्रेरित होता है। मूल्यों के वर्गीकरण की यदि बात करें तो हम उन्हें आर्थिक सामाजिक, भौतिक, नैतिक, सांस्कृतिक आदि भागों में विभाजित कर सकते हैं। जब हम मूल्यों को व्यक्तिनिष्ठ मानते है तो पदार्थो का मूल्यांकन मानवों की व्यक्तिगत संतुष्टि के संदर्भ में करते है और ऐसा करना मूल्यों के मूल्य को खो देना है। दूसरी और जब हम इन मूल्यों को वस्तुनिष्ठ मानते है तो इसमें मानवीय संतुष्टि के साथ–साथ वस्तुनिष्ठ सिद्धान्तों का भी योग होता है। शिक्षा की दृष्टि से व्यक्तिनिष्ठ मूल्यों का नहीं वरन् वस्तुनिष्ठ/सामाजिक मूल्यों का ही महत्व है। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो इस भौतिकवादी युग में स्वार्थपरकता हमें समाजनिष्ठ मूल्यों के आधार पर व्यक्तित्व निर्माण व चरित्र निर्माण की जरूरत महसूस हो रही है और हम मूल्य शिक्षा की पुनः समीक्षा करने लगे है।

अब यदि मूल्यों का ढाँचा हमने तैयार कर लिया तो क्या इसे आगे–मानवता के लिए प्रसारित किया जा सकता है या नहीं जो विचारक मानते है कि मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है उनके समर्थको का मानना है कि ज्ञान की सद्गुण है इसका मतलब यह है कि यदि बालकों/छात्रों को मूल्यों की जानकारी करा दी जाए तो उनमें सद्गुण है। इसका मतलब यह है कि यदि बालकों / छात्रों को मूल्यों को जानकारी करा दी जाए तो उनमें सद्गुणों का विकास अपने आप हो जायेगा। परन्तु व्यवहार में यह देखा जाता है कि झूठ बोलना पाप है चोरी करना अनैतिक कर्म है इन नैतिक प्रत्ययों का ज्ञान होते हुए भी लोग ऐसा करते पाये जाते है, तो क्या यह मान लिया जाए कि मूल्यों की शिक्षा नहीं दी जा सकती है।

परन्तु यदि हम ऐसा मान ले तो हमारे ऐसा मान लेने से हमारी सारी औपचारिक शिक्षा व्यवस्था औचित्यहीन हो जायेगी। अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय में भेजना बंद कर देंगे क्योंकि जन सामान्य में शिक्षा का तात्पर्य नैतिक व्यवहार / सदाचार से अन्वित हो चुका है। दूसरे पक्ष के लोग मानते है कि नैतिक मूल्यों की शिक्षा नहीं दी जा सकती। ये तो व्यक्ति में जन्मजात प्रत्ययों के समान होतें है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति नैतिक रूप से मूल्यों के अनुरूप जीवन व्यतीत करता है तथा कोई व्यक्ति निकृष्ट आचरण / व्यवहार करता है।

वर्तमान विज्ञान एवं तकनीकी प्रधान युग में सबसे बड़ी समस्या यह नहीं है कि मूल्यों का हस्तान्तरण आगे संभव है या नहीं, वरन् समस्या यह है कि मूल्यों का चुनाव कैसे करें ? कौनसे मूल्य हमारे लिये श्रेष्ठ है व कौनसे निकृष्ट – जिनके अनुसार आचरण करें व किन–किन मूल्यों को त्याग दें, फिर यह निर्धारण कर भी लिया जाए तो वह व्यक्ति कौन होगा जो हमें यह बतायेगा कि आपके लिए ये नैतिक मूल्य श्रेष्ठ है यदि यह मान भी लिया जाए तो उस व्यक्ति को ही हमारे नैतिक मूल्यों का निर्धारक कैसे माना जाए। यह एक गंभीर पहेली है आज लोग पुराने मूल्य छोड़ रहे है और नये मूल्यों को स्वीकार करने में भी हिचक रहे है। ऐसी स्थिति में हमारे शैक्षणिक संस्थान व परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है क्योंकि यहां पर आयोजित होने वाली सभी गतिविधियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मूल्यों से भी संबंधित होती है। परन्तु ये सभी मूल्य वांछनीय ही हो यह अनिवार्य नहीं – इसलिये अपरिहार्य जरूरत इस बात की है कि वांछनीय मूल्यों के विकास के लिए, मूल्यपरक, शिक्षा, आयोजित की जाए ताकि छात्रों में वांछनीय मूल्यों को अपनाने एवं अवांछनीय मूल्यों को त्यागने की तथा उचित मूल्यों के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न हो सके ।

निष्कर्ष :

भारत में नैतिकता की समस्या भी सबसे मौलिक है क्योंकि इसका संबंध मानव अस्तित्व से है। नीतिशास्त्र का संबंध ऐच्छिक किया या आचरण से है। भारतीय नैतिक दर्शन का मूल्यों की स्थापना में योगदान किसी से छिपा नहीं है हमारी नीतिशास्त्र की जड़ें, वैदिक, साहित्य में निहित है। भारतीय धर्म ग्रन्थों में मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता को जिस प्रकार सामाजिक धरातल प्रदान किया गया है और मानव को आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति की प्रेरणा दी गई है वह मनुष्य की पूर्णता की प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

आज वर्तमान युग में ईमानदारी, सच्चाई, सहिष्णुता, कर्मठता, न्यायशीलता, मर्यादा, शुद्ध आचार विचार, पवित्रता, रहन–सहन तथा परम्पराओं में हमें ये मानव मूल्य प्राप्त हुए है, इन मानवीय मूल्यों को समाज सेवा संगठन सत्ता और प्रबन्धन में इस प्रकार प्रयोग करना है ताकि वो नीति निर्धारण में सहयोगी बन सके। आचरण की शुद्धता से ही चरित्र का निर्माण होता है व आत्म शुद्धि के द्वारा मानव विकास के सर्वोत्कृष्ट शिखर पर पहुँच पाता है। इस प्रकार सभी प्राचीन नैतिक मूल्य जो सनातन काल से चले आ रहे है हमें उनकी धारा में बहते चले जाना है, ताकि हमारी व हमारे विशाल विश्व परिवार की नीवें खोखली न हो सके।

REFERENCES

1. आलेख – डॉ. दिवाकर मिश्र
2. नीतिशतकम् – भर्तृहरि
3. संस्कार शिल्पी पाण्डेय रामशक्ल
4. शिक्षा मनोविज्ञान – चौबे डॉ. सरमू
5. गुणात्मक अध्यात्मक शिक्षा की पाठ्यचर्चा प्रारूप NCERT
6. नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता – डॉ. सुरेन्द्र सिंह नेगी